श्लोक नं॰ 37

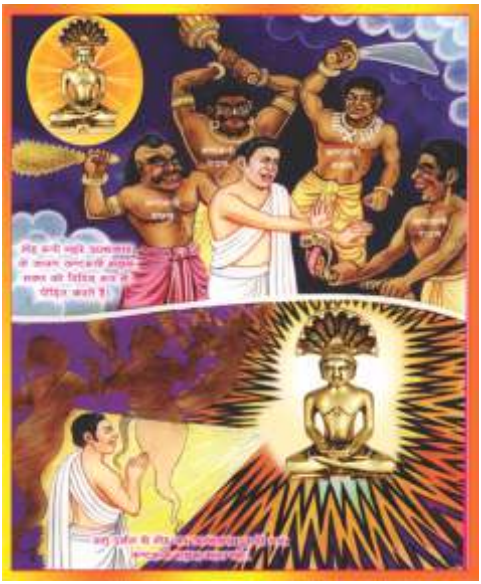

प्रभु दर्शन न करने का फल

नूनं न मोह - तिमिरावृतलोचनेन
पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः
प्रोद्यत्प्रबन्ध - गतयः कथमन्यथैते॥37॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

मोहतमस से ढके हुए ये मेरे प्रभो नयन।
श्रद्धा से इक बार भी मैंने किए नहीं दर्शन॥
इसीलिए अब मर्मभेदी दुख सता रहे मुझको।
पूर्व कर्मकृत संचित फल यह बता रहे मुझको॥
जिन-दर्शन से निज-दर्शन अब मुझको करना है।
दुःख मिटाकर अनन्त सुख का स्पर्शन करना है॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥37॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं।

कायबलर्द्धिसंसक्तान्, वर्ष्यव्युत्सर्गधारिणः।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 37॥

ॐ ह्रीं अर्हं कायबलिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. नूतन जीवन मिल जाता जब, भक्त निकटता पाता है।
तजकर वह मिथ्यात्व भाव को, श्रद्धा से भर जाता है॥ 2017॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. जिनं-जिनं कहकर जब सुरगण, विमान से आ नमते हैं।
कब पाऊँ प्रभु इष्ट समागम, मेरे नयन तरसते हैं॥ 2018॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. नरपति अहिपति भी प्रभुवर की, एक झलक पाने तरसे।
दर्शन कर साक्षात् प्रभु के, समकित का सावन बरसे॥ 2019॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. मोह महातम क्षय कर प्रभु ने, मोक्ष महा पद पाया है।
नन्त वीर्यधारी जिनवर के, द्वार भक्त यह आया है॥ 2020॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. हरिए भव भटकन की विपदा, नाथ आप हो सर्व समर्थ।
तुम्हें छोड़ किस दर पर जाऊँ, आप मिटाते घोर अनर्थ॥ 2021॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तिल भर आत्मिक सुख ना पाया, इन्द्रिय मन के विषयों में।
अतः जगत की आशा तजकर, आया हूँ प्रभु चरणों में॥ 2022॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. मिट जाए भव-भ्रमण प्रभु मम, निजात्म में थिर होना है।
लखकर वीतरागता मुझको, अखण्ड शिवपद पाना है॥ 2023॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. रागी और वीतरागी में, अन्तर धरती अम्बर का।
दर्शन योग्य नहीं है रागी, रूप लखूँ मैं जिनवर का॥ 2024॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. वृथा गँवाया समय भोग में, आज समझ में आया है।
डूबा रहूँ नाथ भक्ति में, यह मम हृदय समाया है॥ 2025॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. तन की भूख तनिक सी होती, मन की मेरु समान कही।
इच्छाओं पर करो नियन्त्रण, गुरु कहते पा ज्ञान सही॥ 2026॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. लोभ पिता है सर्व पाप का, इससे भव का ताप बढ़े।
परद्रव्यों से जो रति तजते, आगम कहता पाप घटे॥ 2027॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. चाह नहीं कुछ पर पदार्थ की, जो चाहूँ वह निज में है।
स्व-सम्मुख नित दृष्टि रहे मम, यही प्रार्थना प्रभु से है॥ 2028॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. नेता हो प्रभु तीन लोक के, शिवपथ का नेतृत्व करें।
जो भी मार्ग बताते स्वामी, भव्य जीव अनुसरण करें॥ 2029॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ने' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. नष्ट कर दिए अष्ट कर्म को, सम्यक्त्वादिक गुण प्रकटे।
पार्श्वप्रभु के आराधन से, मोह महातम घन[1] विघटे॥ 2030॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. पूर्ण ज्ञानमय सूर्य उगा है, प्रभु के शुद्धातम नभ में।
व्याप्त हुआ है ज्ञान प्रभु का, लोकालोक चराचर में॥ 2031॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पूर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. वंद्य जनों से वन्दनीय हो, पूज्यनीय से पूज्य प्रभो।
तव दर्शन को नयन तरसते, दर्शन दो इक बार विभो॥ 2032॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. बादल

17. विचरण करते ज्ञान बाग में, शील सुमन महकाते हो।
समरस पीने वाले प्रभु जी, सर्व जगत को भाते हो॥ 2033॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. भोक्ता बनकर परद्रव्यों का, अतीव कष्ट उठाए हैं।
निजात्म का अवलोकन करने, दर्पण सम प्रभु पाए हैं॥ 2034॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. सकल विश्व में नाथ आप-सा, और न कोई ज्ञानी है।
नन्त चतुष्टय धारी स्वामी, वीतराग विज्ञानी हैं॥ 2035॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. कृतज्ञ हूँ मैं नाथ आपने, मोक्ष-पन्थ को दिखलाया।
था अनजान मोक्षपथ से अब, आप कृपा से चल पाया॥ 2036॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. दर्शक हो प्रभु सर्व विश्व के, किन्तु राग औ द्वेष नहीं।
धन्य आपकी अनुपम महिमा, गुण गाने को शब्द नहीं॥ 2037॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. पिछले सुकृत से हे भगवन्! आराधन करने आया।
बीते भव में जिनशासन की, रुचि नहीं मन में लाया॥ 2038॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. प्रदक्षिणा त्रय देकर भगवन्, समवसरण में दर्श करूँ।
प्रबल भावना यही भक्त की, अर्चन कर दुष्कर्म हरूँ॥ 2039॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. विनम्र होकर जो भी भविजन, पूजन करके ध्यान करे।
स्वानुभूति की धुन सुन करके, शिवरमणी से मिलन करे॥ 2040॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. **लो**ह स्वर्ण बन जाता है जब, पारसमणि का स्पर्श करे।
भव्य जीव भगवन् बनता जब, पार्श्वप्रभु का ध्यान करे॥ 2041॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. **कि**ट्ट कालिमा त्रिविध कर्म की, ध्यान नीर से धो डाली।
शुद्ध पवित्र चिदातम द्वारा, मुक्तीललना परिणाई॥ 2042॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. **तो**षक-पोषक भवि जीवों के, जगती का उद्धार करें।
शरणागत को करुणासागर, अथाह भवदधि पार करें॥ 2043॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. त्रिनेत्रो**ऽसि** पार्श्व जिनेश्वर, स्व-पर तत्त्व प्रत्यक्ष लखें।
निराहार रहकर भी भगवन्, पल-पल परमानन्द चखें॥ 2044॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. **म**र्त्य लोक से सिद्धलोक के, पार्श्वप्रभु को वन्दन है।
शीश झुकाकर नमूँ यही से, श्रद्धा से अभिनन्दन है॥ 2045॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. **मा**ननीय हो त्रय लोकों में, दोष अठारह रहित प्रभो।
निराकार हो निर्विकार हो, विभाव विरहित आप विभो॥ 2046॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. **वि**नीत होकर जो जिनवर की, निर्वाञ्छक भक्ति करता।
निश्चित ही वह निर्भय होकर, मुक्ती की सीढ़ी चढ़ता॥ 2047॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. **धो**ने आया कर्म मैल को, नाथ आपके ही दर पर।
भेदज्ञान जल संयम साबुन, लेने आया हूँ जिनवर॥ 2048॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. विराधना की निज आतम की, अतः भटकता हूँ स्वामी।
करूँ रात-दिन मैं आराधन, बन जाऊँ मुक्तीगामी॥ 2049॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. धुन ना लागी सच्चे सुख की, नश्वर इन्द्रिय सुख चाहा।
नाथ आपकी सन्निधि पाकर, सब विकार की हो स्वाहा॥ 2050॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रहस्य कर्मों का बतलाकर, कर्म नाश की युक्ति दी।
जिसने निर्वाञ्छक भक्ती की, उनने पाई मुक्ति ही॥ 2051॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. जयन्ति जिनवर मोहादिक को, मोह विजेता कहलाए।
दस दिश में जयघोष हुआ औ, धर्मध्वजा को फहराए॥ 2052॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. तिरस्कार निज का करवाता, जड़ कर्मों से मिल करके।
अपने ही हाथों से अपने, घर में आग लगा करके॥ 2053॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. हितोपदेशी प्रभु की वाणी, सत्पथ की दिग्दर्शक है।
धर्मामृत के प्यासे जन को, प्रभुवर ही उपदेशक हैं॥ 2054॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. माला फेरे कर में लेकिन, मन बाहर में घूम रहा।
प्रभु कहते वह भी बेचारा, भवसागर में डूब रहा॥ 2055॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. मदनविजेता नाम तिहारा, सुमरन से दुख मिट जाता।
निश्चल मन से ध्यान करे तो, संकट पल में कट जाता॥ 2056॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. नर्तन कर मैं चारों गति औ, चौरासी लख योनि में।
भटक-भटक करके आया हूँ, नाथ आपके चरणन में॥ 2057॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. निर्ग्रन्थाः ऋषि मुनिवर भी जब, ध्यान आपका करते हैं।
ध्यान दशा में अहो ज्ञान के, अविरल झरने झरते हैं॥ 2058॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. प्रोत्साहन पाकर गुरुवर का, भव्य जीव मुनिवर बनते।
रत्नत्रय को धारण कर वे, शिव सोपान स्वयं चढ़ते॥ 2059॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. उद्यत् होकर शुभ भावों से, द्रव्य चढ़ाने लाया हूँ।
प्रभु चरणों में करूँ समर्पित, श्रद्धा से भर आया हूँ॥ 2060॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्यत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. प्रतिमा प्रभु की निरख-निरख कर, नयन तृप्त ना होते हैं।
बद्ध कर्म-मल को भव्यातम, पल-भर में ही धोते हैं॥ 2061॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. बन्धु मीत आप ही मेरे, नित हितपथ दर्शाते हो।
नहीं आप-सा दूजा जग में, नाथ आप मन भाते हो॥ 2062॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. धरणइन्द्र भी प्रभु-भक्ति कर, समकित सुख को पाता है।
बिन मांगे सब कुछ मिल जाता, खाली हाथ न जाता है॥ 2063॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. गहन गहनतम ध्यान लीन हो, ज्ञान समन्दर में उतरे।
अनन्त गुण मणि मुक्ता पाकर, आत्म सुसज्जित कर विचरे॥ 2064॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तरङ्ग सारी विकल्प की तज, निस्तरङ्ग जिन भाव धरें।
निजानुभव संग केलि करके, अखण्ड परमानन्द वरें॥ 2065॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. प्रायः प्रभु स्वप्न में दिखते, कब प्रत्यक्ष दर्श पाऊँ।
है अधीर यह बालक स्वामी, मन चाहे तव दर आऊँ॥ 2066॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. कथनी करनी में अन्तर है, तो वह शुद्ध न हो सकता।
बाह्य दिखावा करे धर्म में, कैसे सिद्धि पा सकता॥ 2067॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. थाम लीजिए बाँह प्रभु जी, डूब रहा भवसागर में।
तुम सम खेवटिया होकर भी, जाऊँ कहाँ मैं किस दर पे॥ 2068॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. मन्द हुए हैं पाप कर्म भी, पुण्यास्रव भी बहुत हुआ।
जब मम मन भक्ति में डूबा, अहो निजातम तत्त्व छुआ॥ 2069॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. यथार्थ द्रव्य स्वरूप बताकर, स्वात्म द्रव्य को श्रेष्ठ कहा।
दिव्य-देशना सुनकर प्रभु की, जाना स्वातम एक अहा॥ 2070॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. थैइ-थैइ नाचे प्रभु के आगे, सुरपति आनन्दित होकर।
भूल गया सुध-बुध सब तन की, निजातमा की सुध पाकर॥ 2071॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थै' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तेजोमय परमौदारिक तन, प्रभु का लगे दिव्यतम है।
दर्शन करने से भव्यों का, मिटता सर्व मोह तम है॥ 2072॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

किए न श्रद्धा से कभी दर्शन, अतः कर्म नित सता रहे।
अनन्त सुख पाने अब भगवन्, अर्घ्य चरण में चढ़ा रहे॥ 37॥

ॐ ह्रीं श्रीं दर्शनीयाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 38

भाव शून्य क्रियाएँ निष्फल

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव दुःखपात्रम्
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव-शून्याः॥ 38॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

नाथ आपका नाम सुना पूजा औ दर्श किया।
किन्तु भक्ति से तुमको मन में धारण नहीं किया॥
इसीलिए मैं नन्त दुखों का पात्र बना भगवन्।
भेद ज्ञान बिन विफल हुए सब क्रिया ज्ञान-दर्शन॥
धर्म कर्म में किया दिखावा धर्मी कहलाया।
नन्त काल से बना विकारी कष्ट बहुत पाया॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 38॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं।

क्षीरस्वादून्नृषीन् वाचा, तर्पकान् क्षीरवन्नृणाम्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षीरस्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

पद्धरि छन्द

1. **आगम को जो माने भव्य, भगवन् बनकर हो जगवन्द्य।**
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2073॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'आ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **कर्म नाश कर शिवपद पाय, निज शुद्धातम दर्श कराय।**
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2074॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **णिक्कम्मा कहते मुनिराय, सर्व कर्म से रिक्त जिनाय।**
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2075॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **तोड़ दिया पर से सम्बन्ध, हुए आप जिनवर निर्बन्ध।**
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2076॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **सर्वेऽपि प्रभु व्याप्त सु-ज्ञान, दर्शन से मिटता अज्ञान।**
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2077॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **मनोज्ञ छवि प्रभु की मन भाय, पूजन करके मन हर्षाय।**
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2078॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **हितकारी जिन-वचन सुहाय, भव्य जीव शिवमार्ग लहाय।**
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2079॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तोड़े कर्म बन्ध जिनराज, प्राप्त किया शिव का साम्राज्य।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2080॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. भवान्तरेऽपि प्रभु का साथ, मिले भावना यह दिन-रात।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2081॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. निजगृह मुझको पाना नाथ, मिला आपका हितकर साथ।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2082॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. रीत भक्ति की जान न पाय, कैसे वह शिवधाम लहाय।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2083॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'री' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. क्षिति तल पर तुम-सा ना नाथ, दिखे नहीं मुझको जिनराज।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2084॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. तोरणद्वार सजाकर नाथ, तोड़ूँ कर्म बन्ध को आज।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2085॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. मोक्षेऽपि हैं नन्त जिनेश, सबको वन्दन करूँ हमेश।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2086॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. अनूप जिनवर रूप विशेष, दिखलाता है चिन्मय देश।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2087॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नू' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. ज्ञानं ही सच्चा धन जान, जड़ धन सर्व विनश्वर मान।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2088॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. नमन प्रभो करिए स्वीकार, कर देना भवसागर पार।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2089॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. चेतन मेरे अब तो जाग, कहें प्रभु परिग्रह को त्याग।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2090॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तत्त्व विचार करे जो जीव, दु:ख मिटे सुख पाए अतीव।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2091॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. सिद्ध होय मम मुक्ती काज, केवल आप सहायी नाथ।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2092॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मम उर में नित बसिए नाथ, सुमरन करूँ हृदय से आज।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2093॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. याम आठ कर लूँ जिनध्यान, प्रकट करूँ निज का भगवान।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2094॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. विमल विशुद्ध प्रभो निर्दोष, भरा नन्त गुणगण का कोष।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2095॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. धृति धारकर मुक्ती पाय, नन्त शक्ती प्रभु जी प्रकटाय।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2096॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धृ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तोड़ सभी कर्मों के बन्ध, होना है मुझको निर्बन्ध।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2097॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. सिद्धोऽसि बुद्धोऽसि आप, मिटा दिया जग का सन्ताप।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2098॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भक्त भक्ति में हो लवलीन, शीघ्र करे पापों को क्षीण।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2099॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. त्याग ग्रहण से रहित जिनेश, नित्य स्वरूप लीन परमेश।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2100॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. जागृत हो जा चेतन राज, जगा रहे तुझको जिनराज।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2101॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तोषक-पोषक हैं जिनराज, भव्यजनों के तारक आप।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2102॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. विनतोऽस्मि द्वय जोडूँ हाथ, मोक्षपुरी तक देना साथ।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2103॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तेरा-मेरा करके नाथ, स्वातम महिमा हुई न ज्ञात।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2104॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. नरक मनुज पशु सुरगति चार, जन्म लिया है बारम्बार।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2105॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जन्म-जरा मृत्यु दुखकार, दूर करो मम तारणहार।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2106॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. नमो नमः नाथों के नाथ, झुका रहा तव द्वय-पद माथ।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2107॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. बान्धव सुख में रहे सहाय, दुख में दूर-दूर हो जाय।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2108॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. धर्मयान पर बैठा भक्त, भव भोगों से होय विरक्त।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2109॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. वसु द्रव्यों से पूज रचाय, प्रभु सन्निधि से मन हर्षाय।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2110॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. दुःसह दुख का कारण मोह, यही जान प्रभु पहुँचे मोक्ष।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2111॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दुः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. खड्ग ध्यान की जिनवर धार, किया अष्ट कर्मों पर वार।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2112॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. पान करे वचनामृत भव्य, संयम धरकर हो जगवन्द्य।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2113॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. मन्त्रं जपते श्रद्धा धार, निश्चित उनका हो उद्धार।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2114॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्रं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. यस्य[1] हृदय में जिनवर आप, जीवन हो जाता निष्पाप।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2115॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. है मात्सर्य भाव दुखदाय, स्वात्म शक्ति का नाश कराय।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2116॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मात्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. क्रिया मात्र से नशें न कर्म, प्रभु कहें धर उर में धर्म।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2117॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. दयाः क्षमा की मूरत आप, पूजन कर मिटता भव ताप।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2118॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'याः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. प्रभु की महिमा अतुल अमेय, बड़े-बड़े ध्यानी के ध्येय।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2119॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. तिनका-तिनका जोड़े अज्ञ, संग न अणु भी रखते विज्ञ।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2120॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. फल की इच्छा कर नर-नार, बढ़ा रहे अपना संसार।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2121॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'फ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. लख चौरासी घूमे जीव, भावों से दुख पाय अतीव।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2122॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. जिसके

51. अन्तिम भव मानव का पाय, कब मुनि बन शिवपुर को जाय।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2123॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नमूँ हजारों बार जिनाय, तव पूजन कर पाप नशाय।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2124॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. भामण्डल की महिमा जान, अपना अन्तिम भव पहचान।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2125॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. वश में करके मन औ अक्ष, प्रकटा ज्ञान सकल प्रत्यक्ष।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2126॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. शून्य रूप सुख सकल जहान, नाथ आप हैं सुख की खान।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2127॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शून्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. धन्याः हैं वे जीव सदैव, नमन करे जो भी सिर टेक।
पार्श्वप्रभु को शीश नवाय, पूजन कर मन शान्ति पाय॥ 2128॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'याः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

नाम सुना पूजा भी नाथ, किन्तु हृदय में दिया न स्थान।
अतः बना दुःखों का पात्र, अब पूर्णार्घ्य लिया निज हाथ॥38॥

ॐ ह्रीं श्रीं भक्तिहीनजनमाध्यस्थाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 39

भक्त की प्रार्थना

त्वं नाथ! दु:ख-जन-वत्सल! हे शरण्य!
कारुण्य-पुण्यवसते! वशिनां वरेण्य!
भक्त्या नते मयि महेश! दयां विधाय
दु:खाङ्कुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि॥ 39॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

दुखियों के दुख हर्त्ता शरणागत प्रतिपालक हो।
पुण्यमूर्ति हो मुझ बालक के पालक नायक हो॥
अत: सुनाने व्यथा कथा मैं दर पर आया हूँ।
दु:ख मूल निर्मूल करोगे आशा लाया हूँ॥
विघ्न विनाशक संकटहर की महिमा न्यारी है।
अनगिन तार दिए भगवन् अब मेरी बारी है॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 39॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं।

सर्पिःस्वादुमुनीन् वाण्या, घृतवत्-सौख्यदान् सताम्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 39॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्पिःस्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

विष्णुपद छन्द

1. **त्वं निर्मोहं निर्मल रूपं सविनय वन्दन है।**
नाथ आप सम वीतरागता चाहे मम मन है॥ 2129॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **नाशवान जग के पदार्थ की तजकर अभिलाषा।**
पूजन करने आया शिवसुख पाने की आशा॥ 2130॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **थकी आत्मा अपार भवदधि में गोते खाते।**
पार करो प्रभो करूँ निवेदन चरणों में आके॥ 2131॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **दुःख नाश करने की औषध प्रभु वचनामृत हैं।**
श्री जिनवाणी नाथ आपके मुख से निसृत है॥ 2132॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दुः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **खिली हृदय की कली अभी तक जो थी मुरझाई।**
कई जन्मों के पुण्योदय से जिन सन्निधि पाई॥ 2133॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **जगमग ज्योति जली ज्ञान की प्रभु चेतना में।**
सप्त तत्त्व का किया विवेचन दिव्यदेशना में॥ 2134॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **नत मस्तक हूँ तीन योग से सुमरन करता हूँ।**
सम्यक् मरणसमाधि हो यह अरजी करता हूँ॥ 2135॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. वत्स समान आपका मैं प्रभु जगत्पिता मेरे।
करुणा करके मिटा दीजिए भव-भव के फेरे॥ 2136॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. सर्वदर्शी होने से युगपत् सबको देख रहे।
नाथ आपके प्रति हृदय में श्रद्धा धार बहे॥ 2137॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. लघुता से प्रभुता मिलती यह भगवन् कहते हैं।
तव समान होने को सारे भव्य तरसते हैं॥ 2138॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. हे जिन तव शिवगामी पद में त्रियोग से नमता।
करके निज उपयोग शान्त तव गुण चिन्तन करता॥ 2139॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. शरणागत जिन दर पर आ मनवाञ्छित पाता है।
रागी राग छोड़कर वैरागी हो जाता है॥ 2140॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. अरण्य रोदन सम जग में ना कोई सुनता है।
कृत कर्मों के फल को कोई मिटा न सकता है॥ 2141॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रण्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. यम राजा भी जिनराजा का कुछ ना कर सकता।
मृत्युञ्जय हो जाता है जो यम से ना डरता॥ 2142॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. काल अनन्ता बीत गया है भव-भव में भ्रमते।
है विश्वास नहीं भटकूँगा अब तव दर पाके॥ 2143॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. कारुण्यादिक अनन्त गुण के भगवन् भण्डारी।
मैं अनन्त दोषों से भगवन् दुख सहता भारी॥ 2144॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रुण्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. यदा-कदा पूजन करते जो रहे भदैया वे।
नित पूजा कर बनो सदैया आगम कहता ये॥ 2145॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. पुण्य-पाप द्वय कर्म नाशकर मोक्ष गए स्वामी।
पार्श्वप्रभु की कथा श्रवण कर बनूँ मोक्षगामी॥ 2146॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पुण्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. यथार्थ तत्त्व न जान सका मैं बीता काल अनन्त।
पूर्व भवों के तीव्र पुण्य से पाई शरण जिनन्द॥ 2147॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वर्द्धमान है धर्म आपका जग को हितकारी।
सुख की वृद्धि करने वाला भव-भव दुखहारी॥ 2148॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. समकित ज्ञान चरित की कलियाँ खिल-खिल जाती हैं।
जब भव्यातम नाथ आपके पथ पर चलती हैं॥ 2149॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तेज कान्ति तव परमौदारिक तन की दिखती है।
कोटि रवि-राशि की कान्ति भी फीकी पड़ती है॥ 2150॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. वस्त्राभूषण तजकर प्रभु ने तप अंगीकारा।
स्वयं तिरे भवदधि से शरणागत को भी तारा॥ 2151॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. शिवगामी होकर पारस जिन सिद्धक्षेत्र पहुँचे।
तीन लोक के अग्र भाग पर नाथ आप राजे॥ 2152॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तपोधनानां ध्येय रहा है निज शुद्धातम ही।
नाथ आपसे सरल हुआ है यह शिवमारग ही॥ 2153॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नाम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. वर अभिशाप नहीं देते हैं वीतराग स्वामी।
लगते हो आबाल वृद्ध को प्रिय अन्तर्यामी॥ 2154॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रे मन अब तो जाग जरा नरभव क्यों खोता है।
पार्श्वप्रभु से जिनवर पाकर क्यों तू रोता है॥ 2155॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. गण्य जनों से वन्द्य आपका दर्शन दुर्लभ है।
मुझे बुला लो पास प्रभु जी बालक दुर्बल है॥ 2156॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. भक्ती पात्र में मेरे भगवन् विरागता भरिए।
नन्त काल से हारा हूँ मम कर्म सभी हरिए॥ 2157॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. त्यागोत्सव में आनन्दित थे चउ निकायी देव।
तप का अनुमोदन करने आए लौकान्तिक देव॥ 2158॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नर-नारी प्रभु दिव्य-छवि को अपलक रहे निहार।
श्रद्धा से करते हैं प्रभु की आज्ञा को स्वीकार॥ 2159॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तेरे नाम किया है सारा जीवन पारसनाथ।
जब तक मोक्षभवन ना पाऊँ देना पल-पल साथ॥ 2160॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. महिमा मण्डित नाथ आपके गुण कैसे गाऊँ।
सात राजू हूँ दूर निकट प्रभुवर कैसे आऊँ॥ 2161॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. सामायिक में भक्तों को प्रभु आप दीखते हैं।
इसीलिए वे नित्य सवेरे तुम्हें पूजते हैं॥ 2162॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मधुवन के सर्वोच्च शिखर से मोक्ष गए स्वामी।
श्रद्धा भक्ति द्वय नयनों से दिखते जगनामी॥ 2163॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. हे पारस प्रभुवर आ जाओ ज्ञान वेदिका पर।
कबसे तुमको टेर रहा हूँ पावन परमेश्वर॥ 2164॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शम दम यम से नाथ आपने कर्म विनाश किए।
देह रहित होकर भक्तों के मन में वास किए॥ 2165॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. दल लेकर सब देव-देवियाँ तुम्हें पूजते हैं।
जिनमन्दिर में मधुर स्वरों में गीत गूँजते हैं॥ 2166॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. त्रय्यां शुद्धि पूर्वक जो भी अर्चा करता है।
आत्म विशुद्धि पाकर वह शिवललना वरता है॥ 2167॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'याम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. विद्याधर चक्रीधर प्रभु पूजन कर सुख पाते।
गणधर तपधर ध्यान धरें तव अगणित गुण गाते॥ 2168॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. धाम अतीन्द्रिय सर्वश्रेष्ठ जहाँ आप विराजे हैं।
आ जाऊँ मैं शीघ्र वहाँ यह भाव बनाये हैं॥ 2169॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. यथायोग्य शक्तिपूर्वक संयम को ग्रहण करो।
जिनवाणी माँ कहती है शिवपुर को गमन करो॥ 2170॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. दुःश्रुति तज मैं जिनवचनों का कर लूँ नित्य श्रवण।
दोष तजूँ पर के औ गुण का कर लूँ सदा ग्रहण॥ 2171॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दुः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. खाली हाथ न जाता कोई नाथ आप दर से।
निर्दोषी गुणकोषी हो जाता प्रभु सुमरन से॥ 2172॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'खा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. अङ्कुर सुख के उग जाते हैं भक्तों के उर में।
महामोक्ष फल पा लेता है भव्य मनुज भव में॥ 2173॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ङ्कु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रोम-रोम पुलकित होते हैं जिनवर को लख के।
होती तृप्त आतमा निज अनुभव रस चखकर के॥ 2174॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. सद्दर्शन प्रभु का करके निज का दर्शन कर लूँ।
अगले भव में भाव यही है मुक्तिरमा वर लूँ॥ 2175॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. लक्ष्यभूत परमातम को प्रकटाया है स्वामी।
धन्य-धन्य कर लिया सफल नर जन्म पार्श्वनामी॥ 2176॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. नहा-नहाकर ज्ञान-सिन्धु में आतम शुद्ध किया।
छुड़ा-छुड़ाकर त्रिविध कर्म मल पद सिद्धत्व लिया॥ 2177॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. तत्क्षण बाधा मिट जाती है लेते ही प्रभु नाम।
ऐसे अतिशयकारी पारस जिन को नम्र प्रणाम॥ 2178॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. परम पारिणामिक स्वभाव को प्राप्त किया स्वामी।
नहीं आपको कुछ भी पाना शेष रहा स्वामी॥ 2179॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रहकर जग के रंगमंच पर भेष बदलते हैं।
आते जाते राग-द्वेष कर जीव भटकते हैं॥ 2180॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. जगतां नाथ आप सिद्धि का पथ दिखलाते हो।
करने योग्य नहीं करने के योग्य सिखाते हो॥ 2181॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ताम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. विधिपूर्वक करके विधान को प्रभु का ध्यान धरे।
आगम कहता अगले भव वह केवलज्ञान वरे॥ 2182॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. धेनु और कामधेनु में जितना अन्तर है।
जैन और जिनराज प्रभु में उतना अन्तर है॥ 2183॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. हितङ्करी जिन-वचन सुधा पी अजर-अमर होते।
श्रोता भविजन ज्ञान नीर से सब विधिमल धोते॥ 2184॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

व्यथा कथा सुन हे पारस जिन कष्ट मिटा देना।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भावों से मुझको अपना लेना॥39॥

ॐ ह्रीं श्रीं भक्तजनवत्सलाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

श्लोक नं॰ 40

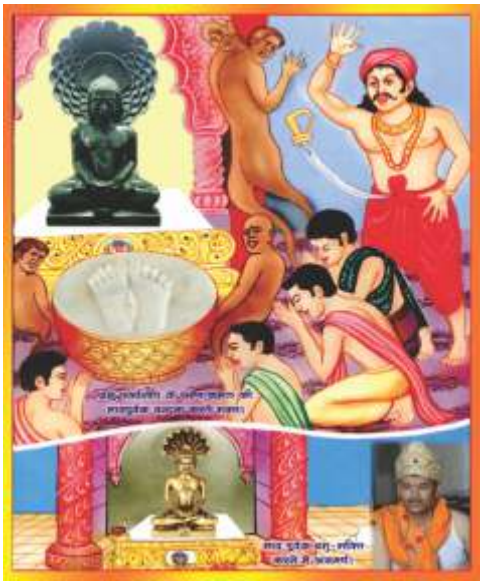

ध्यान में ही सार

निःसंख्य-सार-शरणं शरणं शरण्य-
मासाद्य सादित-रिपु प्रथितावदानम्।
त्वत्पाद-पङ्कजमपि प्रणिधान-वन्ध्यो
वन्ध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन! हा हतोऽस्मि॥40॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

परम पवित्र दयालु जग को पावन करते हो।
अनगिनती जीवों के रक्षक आप कहाते हो॥
दुर्जय कर्म शत्रु के नाशक जग विख्यात प्रभो।
बड़े भाग्य से शरणा पाया पारसनाथ विभो॥
रहा अभागा नाथ आपका ध्यान न कर पाया।
खेद मुझे है जनम-जनम में घोर दुःख पाया॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥40॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुसवीणं।

यतीन्द्रान् मधुरास्वादून्, खाण्डवत् तृप्तिदान् विदः।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं मधुस्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

दोहा

1. **निःशङ्क होकर भव्य-जन, मुक्तीनगरी जाय।**
अनन्त सुख से हो धनी, प्रभुवर-सा पद पाय॥ 2185॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'निः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **संभव होते कार्य सब, करे भक्ति जो जीव।**
बिन मांगे ही भक्त वह, पाता शान्ति अतीव॥ 2186॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **सौख्य अतीन्द्रिय प्राप्त कर, हुए आप स्वाधीन।**
क्योंकि आपने कर दिया, त्रिविध कर्ममल क्षीण॥ 2187॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **सारे दर को छोड़कर, पाया दुर्लभ द्वार।**
वीतराग निर्दोष जिन, पूजूँ बारम्बार॥ 2188॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **रसास्वाद निज ज्ञान का, करते पल-पल आप।**
धन्य परम पुरुषार्थ को, धन्य आप हैं नाथ॥ 2189॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **शत-शत बार करूँ नमन, पाने निज आनन्द।**
जैसा पाया आपने, शाश्वत निज सुखकन्द॥ 2190॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **रङ्ग रूप है देह का, आतम रूप विमुक्त।**
शुद्ध स्वभावी आप जिन, पार्श्वनाथ गुण युक्त॥ 2191॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. णाणं णाणी को नमूँ, प्रणम्य हो प्रभु आप।
नाश कर दिए आपने, सर्व पाप सन्ताप॥ 2192॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. शक्ति नन्त है आपमें, किया कर्म का नाश।
यही भावना भक्त की, रहिए मम उर पास॥ 2193॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रटता हूँ दिन-रात मैं, पार्श्वप्रभु का नाम।
शान्ति मिलती है मुझे, करके नाथ प्रणाम॥ 2194॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. अणंत अव्यय सौख्य का, करते अनुभव आप।
जो पाना था पा लिया, शेष नहीं कुछ नाथ॥ 2195॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. शरण आपकी जो गहे, रहता निडर सदैव।
मैं भी निर्भय हो सकूँ, पूजूँ प्रभु अतएव॥ 2196॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. अरण्य[1] सम संसार है, भटक रहा जिनदेव।
यही प्रार्थना आपसे, पहुँचा दो निजदेश॥ 2197॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रण्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. यत्न बहुत मैंने किए, किन्तु मिला नहीं मोक्ष।
समीचीन पुरुषार्थ बिन, मिले न शाश्वत सौख्य॥ 2198॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. माला थिर मन से फिरे, मनवाञ्छित हो लाभ।
श्रद्धा से अर्चा करे, कटें पाप कई लाख॥ 2199॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. साध्यभूत मम मोक्ष है, साधन उसके आप।
अतः करूँ मैं अर्चना, पार्श्वनाथ जिनराज॥ 2200॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. जंगल

17. वाद्य बजाकर नाथ मैं, करूँ भक्ति गुणगान।
आर्त रौद्र द्वय ध्यान तज, करूँ धर्म्य शुभ ध्यान॥ 2201॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. सार नहीं कुछ जगत में, अतः तजा संसार।
मगन हुए प्रभु स्वयं में, पाया सौख्य अपार॥ 2202॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. दिवस-रात इक लगन है, पाऊँ जिनसम भेष।
पहुँचा दीजे शीघ्र ही, भगवन् चिन्मय देश॥ 2203॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तन्मय होकर जो करे, प्रभु गुणगण का ध्यान।
शीघ्र प्राप्त होवे उसे, अपना लक्ष्य महान॥ 2204॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. रिपु मित्र इक सम जिन्हें, वे मुनि हो भगवान।
परद्रव्यों को निज कहे, वे नर हैं नादान॥ 2205॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. पुत्र पत्नी पैसा सभी, पापी के भी होय।
भक्ति ध्यान प्रभु अर्चना, पुण्यात्मा के होय॥ 2206॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. प्रशान्त जिनवर रूप लख, मिलती शान्ति अपार।
संसारी को देख हो, राग भाव दुखकार॥ 2207॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. थिरक-थिरक कर नाचते, प्रभु के आगे देव।
तन की सुध-बुध भूलते, हो निज-सुख स्वयमेव॥ 2208॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. ताज पहन कर मोह का, मोहताज है जीव।
मोक्षताज अब पहन ले, होगा सुखी सदीव॥ 2209॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. वन हो चाहे भवन हो, काँटे हो या फूल।
समता से ही प्राप्त हो, भवसागर का कूल॥ 2210॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. दाता प्रभु सम और ना, देते शाश्वत मोक्ष।
दर पर याचक है खड़ा, दीजे अनुपम सौख्य॥ 2211॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नम्य जिनेश्वर आप हो, शीश नमावे इन्द्र।
दिव्य रत्न के थाल भर, पूजा करें नरेन्द्र॥ 2212॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. त्वत् पद अर्चा से हुए, भक्त कई अरहन्त।
भव-भटकन को नाशकर, पाऊँ मैं शिवपन्थ॥ 2213॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्वत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. पावन होता मम हृदय, जब प्रभु सुमरन होय।
जन्म-जन्म के पाप सब, क्षण भर में ही धोय॥ 2214॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. दया-सिन्धु करिए दया, दो मनवाञ्छित दान।
अन्तिम मरण-समाधि हो, शीघ्र बनूँ भगवान॥ 2215॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. पङ्कज से ना पङ्क से, दूर रहो हे आर्य।
कहें पार्श्व जिनराज जी, करो आत्म-हित कार्य॥ 2216॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पङ्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. कल्पकाल से भटकता, करके व्यर्थ विकल्प।
वीतराग प्रभु अब मिले, पाऊँ सौख्य अनल्प॥ 2217॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जयकारों से गूँजती, धरा सर्व दिश चार।
यशगाथा सब गा रहे, जब प्रभु करें विहार॥ 2218॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मति सन्मति नित ही रहे, यही प्रार्थना नाथ।
पर प्रपंच में ना पड़ूँ, शक्ति दो जिनराज॥ 2219॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. पिला रहे जिनवच सुधा, पीकर हो आनन्द।
उमङ्ग से जिसने पिया, पाते परमानन्द॥ 2220॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. प्रतापशाली जिनवरा, फैला सर्व प्रकाश।
मेरा भी प्रभु तम हरो, करिए ज्ञान विकास॥ 2221॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. णिम्मल अगणित गुण सहित, सर्व दोष से रिक्त।
स्व-पर तत्त्व को जानकर, पर से हैं निर्लिप्त॥ 2222॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. धारी ज्ञान सु-काय को, देह रहित जिनराज।
देह गेह का नेह तज, पाना है शिव राज॥ 2223॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. नमो नमः पारस प्रभो, परम वन्द्य हैं आप।
झुक जाता है सिर सहज, जहाँ आपके पाद॥ 2224॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. वन्दन करते ना थकूँ, नमूँ अनन्तों बार।
बन्धन में कुछ सार ना, जिन-वन्दन में सार॥ 2225॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. वन्ध्योऽस्मि[1] मैं हूँ प्रभो, किया न जिनपद ध्यान।
खड़ा अभागा द्वार तव, देना अविचल धाम॥ 2226॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. वन्दें जो भी भाव से, कर्म बन्ध कट जाय।
भगवन् का माहात्म्य यह, सर्व दुःख मिट जाय॥ 2227॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. वन्ध्यो[2] निज आनन्द से, अनुभवता दुख नन्त।
छोड़ जगत के द्वन्द्व सब, बनना अब अरहन्त॥ 2228॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ध्यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. विनतोऽस्मि प्रभु-चरण में, पाने शिवसुख नाथ।
और न कोई उपाय है, छोड़ तुम्हें जिनराज॥ 2229॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. चेतन अब तो चेत जा, कहते पार्श्व जिनेश।
भटक रहा तू जगत में, पा ले ज्ञान विशेष॥ 2230॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. अद्भुत प्रभु महिमा रही, वच से कही न जाय।
जो मन से भक्ति करे, अखण्ड शिवसुख पाय॥ 2231॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वसुधा पर जिनराज सम, और न दूजा कोय।
श्रद्धा से जिन दर्श कर, निज का दर्शन होय॥ 2232॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. नम्र भाव से भक्त जब, करे भक्ति हर्षाय।
देह मुक्त हो शाश्वता, शिवपुर राज कराय॥ 2233॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. पापोदय में धर्म की, रुचि नहीं हो पाय।
धन शक्ति औ बुद्धि का, सदुपयोग ना होय॥ 2234॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. अभागा हूँ 2. रहित

51. वशीभूत हो मोह के, किए नन्त दुष्कर्म।
कष्टों के नाशार्थ अब, धारूँ सम्यक् धर्म॥ 2235॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नयन-कमल में बस रहे, पार्श्वप्रभु प्रियनाथ।
जब से पाया आपको, हुई सु-ज्ञान प्रभात॥ 2236॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. हार जीत से हो परे, नाश किए विधि आठ।
निज स्वभाव में रम गए, पावन पारसनाथ॥ 2237॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. हरष-हरष गुण गा रहे, तीन लोक के भक्त।
काया की भी सुध नहीं, जिनगुण में अनुरक्त॥ 2238॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. तोड़ दिए बन्धन सभी, लेकर ज्ञान कुठार।
ऐसे पार्श्व जिनेश को, वन्दन बारम्बार॥ 2239॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. नतोऽस्मि तव पद में प्रभो, त्रियोग से कर जोड़।
अरज यही कब जिन बनूँ, मोह भाव को छोड़॥ 2240॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

अनगिन के रक्षक प्रभो, किए कर्म रिपु नाश।
शरण प्राप्त कर भाग्य से, अर्घ्य चढ़ाऊँ नाथ॥ 40॥

ॐ ह्रीं श्रीं सौभाग्यदायकपदकमलयुगाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।